

काँटन की फसल को किसी कीट से खतरा नहीं

ग्रामीण महिलाओं की खोज ने सबको हैरत में डाला

अमरजीत एच. गिल

गांव निडाना (जींद)। काँटन की फसल में कीट देखकर जो किसान कीटनाशकों की तलाश में बाजारों की ओर निकल पड़ते हैं, उनके लिए एक रहस्य भरी खबर है। काँटन की फसल को बितने भी कीट लगते हैं, वे फसल को रसीयर भी नुकसान नहीं पहुंचाते, बल्कि वे सभी कीट फसल को कुछ इस तरह लाभ पहुंचाते हैं कि किसान की फसल की अधिक पैदावार मिलती है। निडाना व ललितखेड़ा की 30 महिलाओं द्वारा काँटन के कीटों पर किए गए अध्ययन से यह हैरतअंगेज निष्कर्ष सामने आए हैं। तीन महीने तक उन

दोनों गांवों की महिलाओं द्वारा किए गए अध्ययन में पाया गया कि काँटन के पौधे पर रहकर पत्तों को खाते हैं, वह फसल के लिए फायदेमंद ही साबित होता है। पौधों को यह फायदेमंद सूखे की रोगाणी के रूप में मिलता है। महिलाओं ने पाया कि कीट काँटन के पौधे के सबसे ऊपर व बीच वाले पत्तों को खाते हैं। इससे सूखे की किराँपें पौधे की निचले पत्तों तक पहुंचने का मार्ग बन जाता है। चूंकि, इन दिनों काँटन की फसल पर टिंडे आ गए हैं और टिंडों को धुआं मिलने से वे सूखे का रूप लेते हैं। प्रकारा संश्लेषण की क्रिया से पौधे अपना भोजन तैयार करते हैं फसल की बढ़त में भारी योगदान देते हैं। गत 19 जून को निडाना व ललितखेड़ा की

30 महिलाओं ने निडाना कीट साधारण अध्ययन केंद्र में काँटन के कीटों पर अध्ययन शुरू किया था। यह अध्ययन अक्टूबर महीने के अंत तक प्रत्येक सोमवार व मंगलवार तक जारी रहेगा। बोते तीन महीने के दौरान महिलाओं ने कीटों पर जो अध्ययन किए और उसके जो परिणाम सामने आए हैं, वह चौकाने वाले हैं। महिलाओं ने अध्ययन के दौरान काँटन की फसल में एक भी कीट ऐसा नहीं पाया, जो फसल को किसी भी प्रकार से नुकसान पहुंचाता हो। महिलाएं अभी तक फसल में 152 कीटों की पहचान कर चुकी है। इस समय ललितखेड़ा व निडाना गांव में काँटन की फसल लहलहा रहती है।

- निडाना और ललितखेड़ा की 30 महिलाओं का निष्कर्ष
- तीन महीने तक काँटन पर कीटों का किया अध्ययन
- पत्ते खाने से टिंडे को मिलती है धूप, खिलती है रूई

निडाना कीट साधारण केंद्र में महिलाओं द्वारा कीटों पर किए जा रहे अध्ययन के परिणाम मसिंध में मील का फलदा बखित होंगे। महिलाओं की फसल में किसान रसायन मुक्त खेती करने के लिए असर हो सकता है। अध्ययन रसायनों के प्रयोग से फसलों की गुणवत्ता पर तो असर पड़ ही रहा है। महिलाएं यह बखित करने लगी हैं कि निदा रसायनों का प्रयोग किए भी खेती की जा सकती है। अध्ययन करने वाली सभी महिलाएं गांव की है और खेतीबाड़ी में जुड़ी हुई हैं।

-डा. सुरेश मतिर, कृषि वैज्ञानिक व एगरीकॉलुजी विभाग जीव।

152 कीटों की हुई पहचान

महिलाओं ने तीन महीने के अध्ययन के दौरान काँटन की फसल पर 152 कीटों की पहचान की। इनमें 45 कीट ताकतवारी और 109 कीट मांसहारी पाए गए। 109 मांसहारी कीटों में से 88 ऐसे हैं, जो अन्य कीटों का भक्षण करते हैं। बाकी 45 ताकतवारी कीटों में से 20 रसपूषक, 15 परभारी, 5 पुष्पहारी, 5 फलहारी और 4 कीट अन्य प्रकार के कीट पाए गए।



तीन महीने पहले गांव निडाना व ललितखेड़ा की महिलाओं ने निडाना कीट साधारण केंद्र में काँटन के कीटों पर अध्ययन शुरू किया था। महिलाओं ने 152 कीटों की पहचान की है। इनमें से एक भी कीट ऐसा नहीं है, जो फसल को नुकसान पहुंचाता है। बल्कि कीट फसल के लिए लाभदायक साबित हो रहे हैं। डा. सुरेश मतिर, कृषि वैज्ञानिक, निडाना कीट साधारण केंद्र।

मित्र कीटों को बचाने की मुहिम तेज

खेत पाठशाला में कृषि विशेषज्ञ ने कीटनाशकों के प्रति चेताया

अमर उजाला ब्यूरो

विशाल गांव (जींद)। खेत एवं कृषि विशेषज्ञ डा. देवेन्द्र लाल का कहनाय है कि देश के किसान कीटनाशकों के उपयोग को लेकर एक चेतना में फल आए हैं, जिससे खतरा निवारण को उन्हें खतरा नहीं लग रहा है। फिर भी वे सोच कर यह निश्चय ही खेत पाठशाला में सुगम अतिथि के तौर पर उपस्थित हो सकते हैं। उनका यह विश्वास है कि देश के किसानों को यह-यह जानकारी से कीटनाशकों के इस्तेमाल के लिए एक ऐसे चेतनापूर्ण प्रयास का एक हिस्सा है, जिससे उन्हें खेत या खेत निवारण विभागों के साथ भी बंधा नहीं है।

एनके संरक्षण की अल्पसंख्यक की जाति खेत पाठशाला में इस संरक्षण को अतिरिक्त रूपों के पीछे भी सोचने में। पीछे की पीछे पीछे की पीछे में खेत निवारण के साथ निवारण कीटों को बचाने की मुहिम में अतिरिक्त।

नवंबर में होनी कीटनाशकों पर खापों की महापंचायत, हाईकोर्ट के जज को बुलाया जाएगा महापंचायत में



जींद के खेत निवारण कीट साधारण केंद्र में कीटों की पहचान करने हेतु देवेन्द्र लाल का ब्यूरो की अतिथि।

जिस में डा. देवेन्द्र लाल भी मौजूद हैं। पंचायत का संरक्षण खाप पंचायत के संरक्षण कुलदीप सिंह द्वारा है किया। डा. देवेन्द्र लाल ने अपने संबोधन में कहा कि निवारण कीटों में कीटनाशकों का खतरा प्रवेश कर रहे हैं। फिर भी फसलों में नुकसान पहुंचाने वाले कीटों की संरक्षण बढ़ाती जा रही है। विशाल कीटनाशकों का प्रवेश करने कीटों के फिर कीटों को खेत की रूई

आंध्रप्रदेश के किसानों का दिया उदाहरण

डा. देवेन्द्र लाल ने बताया कि कई वर्ष पहले आंध्र प्रदेश के किसानों ने कीटनाशक के विकल्पों की तलाश कीटनाशक खेत खेती की मुहिम बनाई थी। उसके परिणामस्वरूप आज आंध्र प्रदेश के 21 जिलों में 35 लाख एकड़ में कीटनाशक खेत खेती होती है और उनकी पैदावार पर भी कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है। अब तो खेत संरक्षण भी किसानों के पास में उतर आया है। अब आंध्र प्रदेश में किसानों की एक मुहिम को अपने साथ में लेते हुए 2012 का अक्टूबर 100 एकड़ जमीन में कीटनाशक खेत खेती का रखा है।

पंचायत चौधरियों ने कैसर बारे पूछे सवाल

कुलदीप द्वारा है पठशाला में आए किसानों ने सवाल प्रश्नोत्तरों से कहा कि कीटनाशकों के प्रयोग के कारण आज किसान जैसे जानकीक बीजों भी लेगी से फैली है। उदाहरण के तौर पर पिछले दिनों निवारण में इन पंचायतों पर से एक प्रश्न है कि इन पंचायतों में 10 बहों में से 9 बहों में कीटों का कोई प्रभाव क्या कर पाती है।

पूरी दुनिया में दिखी निडाना गांव की खेत पाठशाला

दूरदर्शन ने मंगलवार सुबह किया पाठशाला का प्रसारण

अमर उजाला ब्यूरो

जींद। विशाल और उसके आसपास के गांवों के किसानों की कृषि मित्र कीटों पर सोच करके हुए दूरदर्शन ने अपने कार्यक्रम कृषि दर्शन के तहत संरक्षण मुक्त 134 देशों में प्रसारित किया। अपने दर्शन के इस कार्यक्रम में दर्शकों ने कृषि के मित्र कीटों पर सोच करके निवारण की रक्षा। दूरदर्शन ने 28 अक्टूबर को खेत पाठशाला की निवारण की भी। उदाहरण के तहत संरक्षण की दूरदर्शन ने मुक्त पढ़ें कर के साथ बने एक प्रसारण प्रसारण किया गया।

दूरदर्शन की एच टीवी में निवारण

कृषि विभाग अतिरिक्त डा. देवेन्द्र लाल कीटों के साथ निवारण, ललितखेड़ा, विशाल, संरक्षण, पीछेपूरा, सुपुन व संरक्षण लाल के निवारण निदा कीटनाशकों का प्रवेश किए, खेतीबाड़ी कर रहे हैं। निवारण व आसपास के गांव में खेत निवारण का एक प्रसारण किया गया।

सुबह छह बजे प्रसारित कार्यक्रम 134 देशों में दिखा

पढ़ाते हैं और कीट से नहीं। निवारण ने बताया कि उन्होंने कैसे निदा कीटनाशकों को बचाने शुरू की। निवारण ने अपने के साथ कहा कि खेती में निवारण अतिरिक्त कीटनाशकों का प्रयोग कर रहे हैं। उदाहरण के तहत निवारण का प्रवेश किया। दूरदर्शन की एच टीवी में निवारण निवारण के अलावा 8-4 वर्षीय कीटों कृषि वैज्ञानिक डा. अरुण संरक्षण ने निवारण का अतिरिक्त संरक्षण पूर्ण। अतिरिक्त निवारण कीटनाशकों का प्रवेश किए, खेतीबाड़ी कर रहे हैं। निवारण व आसपास के गांव में खेत निवारण का एक प्रसारण किया गया।

दूरदर्शन की एच टीवी में निवारण

कृषि विभाग अतिरिक्त डा. देवेन्द्र लाल कीटों के साथ निवारण, ललितखेड़ा, विशाल, संरक्षण, पीछेपूरा, सुपुन व संरक्षण लाल के निवारण निदा कीटनाशकों का प्रवेश किए, खेतीबाड़ी कर रहे हैं। निवारण व आसपास के गांव में खेत निवारण का एक प्रसारण किया गया।